हिन्दी विभाग

समाज के प्रत्येक व्यक्ति, वर्ग तथा समूह तक, प्रत्येक दलित, शोषित, पीड़ित तक शिक्षा पहुँच सके, यही डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का सपना था। इसी सपने को पूरा करने हेतु डॉ. मधुकरराव वासनिकजी ने 1968 में पी.डब्ल्यू. एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय की स्थापना की। इस महाविद्यालय ने छोटे से खपरैलनुमा भवन से आरंभ कर आज एक विशाल शैक्षणिक भवन का आकार ले लिया है। आज महाविद्यालय का अपना एक प्रशस्त प्रांगण है। इस प्रांगण में चारो ओर लगे वृक्षों के कारण वातावरण बेहद सुंदर और हराभरा है। इस महाविद्यालय के समृद्ध विभागों में एक विभाग हिन्दी विभाग भी है। जहॉ स्नातक, स्नातकोत्तर तथा रिसर्च सेंटर से जुड़ें छात्रों को अध्ययन अध्यापन के साथ ही उनके विषय से जुड़ी समस्याओं का निदान किया जाता है। पाठ्यक्रम से जुड़े अध्ययन अध्यापन के अलावा अन्य विषयों पर भी चर्चासत्र का आयोजन किया जाता है। छात्रों को इस स्पर्धात्मक युग हेतु तैयार कर उनका सर्वांगीण विकास करने का प्रयास किया जाता है। विभाग द्वारा स्नातकोत्तर छात्रों को नेट/सेट हेतु मार्गदर्शन दिया जाता है। साथ ही विविध स्पर्धात्मक परीक्षा की तैयारी कैसे की जाए उस संबंध में विभागीय प्राध्यापकों द्वारा मार्गदर्शन किया जाता है। वर्तमान में विभाग के छात्र विविध क्षेत्रों में कई बडे–बडे पदों पर विराजमान है। यह इस महाविद्यालय तथा विभाग हेतु बडे गर्व की बात है।

हिन्दी विभाग छात्रों के कलात्मक गुणों को बाहर निकालने तथा निखारने हेतु मंच प्रदान करता है। प्रत्येक छात्र की योग्यता उसके कलात्मक गुणों के आधार पर चाहे वह लेखनकला हो या नाटक–अभिनय सभी क्षेत्रों में छात्रों के भीतर रूचि उत्पन्न कर उनके सुप्त गुणों को बाहर निकालकर, उनके डर को समाप्त कर, उन्हें निर्भय बनाया जाता है। छात्रों के भीतर आत्मविश्वास जगाता है। यही आत्मविश्वास इस स्पर्धात्मक युग हेतु बेहद महत्वपूर्ण है जो छात्रों के भविष्य सॅवारने में सहायक है।

विभाग विविध चर्चासत्र, बौद्धिक परिसंवाद, काव्य गोष्ठी, शोध सत्संग, सृजन संवाद तथा राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आयोजन करता है। विभिन्न क्षेत्रों के विविध विषयों के विशेषज्ञों को आमंत्रित कर छात्रों के ज्ञान को समृद्ध किया जाता है। छात्र उनसे प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा को शांत करते हैं। चर्चा सत्रों द्वारा छात्रों से संबंधित विषयों पर चिंतन मनन किया जाता है। परिसंवाद तथा संगोष्ठी के माध्यम से विविध शोध विषयों पर विचार मंथन किया जाता है। शोध सत्संग के माध्यम से शोध की नई दिशा तय की जाती है। सृजन संवाद के माध्यम से उन्हें लेखन हेतु प्रेरित किया जाता हैं।

हिन्दी विभाग का स्वयं का एक छोटा सा समृद्ध ग्रंथालय है जहॉ विविध विषयों की पुस्तकें मौजूद है। छात्र इन पुस्तकों अध्ययन कर, अपने विषय से संबंधित सामग्री एकत्रित करते है। छात्र विभाग के अध्ययन कक्ष में बैठकर अपने शोधकार्य को पूर्ण करते हैं। इस ग्रंथालय में प्रत्येक विषय के अनुसार पुस्तकें रखी गई

है जिससे कोई भी पुस्तक आसानी से ढूँढकर प्राप्त की जा सकती है। अतः छात्रों को पुस्तकों के लिए कही ओर जाने की आवश्यकता नहीं होती, वे अपना अध्ययन तथा शोधकार्य तेजी से पूर्ण कर सकते हैं। स्वानुशासित अध्ययन के माध्यम से उन्हें अध्ययन हेतु प्रेरित करता है। विभाग हमेशा यही प्रयासरत होता है कि वह विद्यार्थियों की सोच को परिष्कृत कर उन्हें शैक्षिक पथ की ओर ले जाने हेतु प्रयास करता है, उनका बौद्धिक विकास करता है।

विभागीय कक्षाएः

स्नातक – B.A. / B.Com. & B.Sc. – अनिवार्य हिन्दी

B.A. – हिन्दी साहित्य

स्नातकोत्तर (M.A.) – हिन्दी विषय

विभाग द्वारा आयोजित विविध कार्य तथा कार्यक्रमः–

- शोध सत्संग
- सृजन संवाद
- स्वानुशासित अध्ययन
- परीक्षापयोगी कार्यशाला
- काव्यगोष्ठी
- योग प्राणायम प्रशिक्षण
- अतिथि वक्तव्य
- सेमिनार, वेबीनार, संगोष्ठी
- कार्यशाला
- चर्चासत्र
- समूह चर्चा आदि।

प्राविण्य प्राप्त विद्यार्थीः–

- ऋषभ जैन – CGPA 7.38 - Summer 2020
- स्वाति सरेयाम – CGPA 7.69 – Summer 2020

विभागीय सुविधाएँः–

- विभागीय ग्रंथालय
- अध्ययन कक्ष
- सिनेमा क्लब

विभागीय प्राध्यापक

- डॉ. मिथिलेश अवस्थी (सेवानिवृत्त)
- डॉ. सुमेध पी. नागदेवे (सहायक प्राध्यापक)
- अंशकालीन प्राध्यापक श्रीमती प्रियंका मेश्राम (दरवाड़े)
- अंशकालीन प्राध्यापक श्रीमती अनिता सहारे
- अंशकालीन प्राध्यापक डॉ. तरन्नुम खान